इन्दौर टेलीफोन कर्मचारियों द्वारा

श्री श्याम निवास

❋ अभिनन्दन समारोह ❋

श्री श्याम निवास एक व्यक्ति एक आदर्श को साकार प्रतिमूर्ति के रूप में हमारे बीच आये और कर्मठता की अनूठी छाप छोड़कर सेवा निवृत्त हो रहे हैं। "सादा जीवन उच्च विचार" के समन्वय इस व्यक्तित्व में एक अजीब आकर्षण है। साथी के लिये प्रगाढ़ प्रेम, अधीन सहानुभूति और अनुज स्नेह इनकी धरोहर है। अधिकारी के लिये कुशल आपकी प्रकृति में सुमार है। अति कुशाग्र, कर्मठ और महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व के रूप में सदा सम्मोहक है।

श्री श्याम निवास का जन्म सन् १९२३ में नेवरी [देवास] नामक गांव में एक सामान्यकृषक परिवार में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उच्च अध्ययन हेतु इन्दौर आये। यहां काफी बहुत अनुभव मिले जिनसे आपके मन पर आघात पहुंचा अतः अपने शिक्षा का विचार छोड़ दिया। सन् १९४० में एक श्रमिक के रूप में डाक-तार विभाग में डाकिन हुए। उस समय श्रमिकों की स्थिति देखकर उसके लिये कुछ कर गुजरने के भाव उमड़ने लगे। श्रमिकों का शोषण होते देख सन् १९४१ में सुधिजन में सम्मिलित हुए और सन् १९४३ में पुलिस अधि योगर एवं टेलीग्राफ क्लर्क में शामिल हुए। सन् १९४७ में इसी पुलिस विभाग अधिवेशन [illegible] के सचिव चुने गये और सन् १९४८ में नागपुर में होने वाले सर्वोच्च अधिवेशन में आप "सुप्रीम कौंसिलर" [illegible] चुने गये। इसके साथ ही दिल्ली में आप सुप्रीम कौंसिलर में अ. भा. कार्य-कारिणी के सदस्य बनाये गये।

सन् १९४८ में ही स्व. श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में एक डेलीगेशन लेकर आप प्र. प्रधानमंत्री नेहरू से मिले और श्रमिकों की वास्तविक स्थिति का खाका उनके सामने खींचा। आपकी दूरदर्शी गति-[illegible] के कारण आपका [illegible] स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतर किया जाता रहा। इससे लोगों में असंतोष दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया अतः आपके उन्हें एक-धीमत नहीं होने दिया। यही कारण है कि सन् १९५० में दार्जा नगर में होने वाले अ. भा. अधिवेशन में असिसटेंट जनरल सेक्रेटरी चुन लिये गये। सन् १९५५ में एन. एफ. पी. टी. ई. फेडरेशन बना, जिसमें डाक-तार कर्मचारियों को एकजुट रखने में आपने अभिभावक तथा सम्पादक मंडल के रूप में उल्लेखनीय कार्य किया। सन् १९६० की हड़ताल पर आपने जो जाल से कार्य किया, जिसके फलस्वरूप आपको निलंबित रहना। सन् १९६८ की हड़ताल के समय आपकी गतिविधियों पर सरकार की तीखी नजर थी मगर बिना किये बिना लोगों के हित और हड़ताल की सफलता के लिये प्राण-प्रण से कार्य किया। फलस्व. माह आप सदिग्ध से निलंबित रहे, सरकार ने आप पर मुकदमे चलाये मगर प्रमाण के अभाव से सुख कर दिये सन् १९७१ से ७४ तक आपने मध्यप्रदेश सर्कल के सचिव के पद पर कार्य किया। प्रमोशन एवं अन्य अनेक सुविधाओं का प्रलोभन देकर आपको चुप कराने का प्रयास किया गया मगर आप कर्त्तव्य मार्ग से विचलित नहीं हुए। सन् १९७३, में लाईन इन्सपेक्टर के पद पर आसीन हुए।

सन् १९७६, गोहाटी अधिवेशन में आपकी सेवाएँ जे. सी. एस. में लेने का आग्रह किया गया और आप दो साल से निरन्तर सेवा दे रहे हैं। श्री श्याम निवास एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था के रूप में हमारे समक्ष आए, सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि, खेलकूद के प्रति लगाव और साहित्य व कला के प्रति आकर्षण सदैव रहा। उनकी सेवाएं निरन्तर विकास पथ को प्रशस्त करने हेतु याद की जाती रहेंगी। २८ फरवरी १९८१ को लाईन इन्सपेक्टर के पद से आप सेवा निवृत्त हुए। हमें आपके साथ कार्य करने का सौभाग्य मिला इसका हमें गर्व है। हम सभी आपके सुखोष स्वास्थ्य और जीवन की

शुभकामनाओं के साथ हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

दिनांक १२ जून १९८१

केन्द्रीय दूरभाष केन्द्र इन्दौर के कर्मचारियों की ओर से

आनन्दराव कोवे
सचिव

आर. एस. चौहान
संयोजक